उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

***कविता रावत एवं **डॉ. नितिन बाजपेयी**

*शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ उ0प्र0,

**असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई

सारांश

मनुष्य का जीवन प्राचीन युग में, आधुनिक युग से सर्वथा भिन्न था। वर्तमान समय में मनुष्य के जीवन स्तर में अत्यधिक परिवर्तन आया है इसका श्रेय सूचना एवं संचार तकनीकी (आईसीटी) को जाता है। आईसीटी का उपयोग करके शिक्षा की गुणवत्ता एवं उपलब्धता को भी अधिकतम लाभार्थियों तक सुगमता से पहुंचाया जा सकता है। आईसीटी का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम उपागम को पुस्तकों एवं पारम्परिक संसाधनों से विलग कर इन्हें और अधिक प्रभावशाली बनाकर न केवल कक्षा के वातावरण को बल्कि अध्यापक एवं शिक्षण अधिगम उपागम को और अधिक बेहतर बनाना है। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। यहां उच्च शिक्षा से तात्पर्य बी.ए., बी.एस.सी., बी.काम, बी.एड. आदि विद्यार्थियों से हैं। इस शोध पत्र में बी.ए. तथा बी.एस.सी. के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इसके अन्तर्गत प्रतिदर्श के रूप में स्नातक स्तर के कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के 100 विद्यार्थियों को लिया गया तथा लखनऊ जिले के श्री जय नारायण पी.जी. कालेज से डाटा एकत्र किया गया। शोध प्रत्र में स्वनिर्मित अभिवृत्ति प्रश्नावली मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा लिकर्ट की अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग अंक प्रदान करने के लिए किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन से ज्ञात हुआ कि लिंग एवं संकाय के आधार पर विद्यार्थी में अभिवृत्ति के प्रति सार्थक अन्तर रखते है। स्नातक स्तर की छात्राएं, छात्रों की तुलना में आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखती है इसी प्रकार कला संकाय के विद्यार्थी विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखते है।

संकेत शब्द *– उच्च शिक्षा, सूचना एवं संचार तकनीकी, अभिवृत्ति।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है लेकिन भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण 'शिक्षा में तकनीकी' है। इस प्रकार इसकी उपयोगिता को कक्षा शिक्षण अधिगम, दूरवर्ती एवं ऑन लाइन शिक्षा तथा अन्य सभी प्रकार के औपचारिक एवं औपचारिक शिक्षण–अधिगम में अधिकाधिक किया जाने लगा है तथा आने वाली पीढ़ी को तकनीकी के प्रयोग हेतु वांछित ज्ञान एवं कौशल प्रदान किया जाने लगा है।

वर्तमान युग सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग है। अनके विकास कार्यक्रम इसलिए अवरूद्ध हो जाते है क्योंकि उनकी सहायता करने वाली सूचनाएं उपलब्ध नहीं होती या उपलब्ध नहीं हो पाती है तथा अनेक बालक सम्पूर्ण आर्हता रखते हुए भी सूचनाओं के अभाव में अवसरों से वंचित हो जाते है। सूचना एवं संचार संसाधनों ने मनुष्य के जीवन के सभी पक्षों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी हस्तक्षेपीय उपस्थिति अंकित करायी है। अब शिक्षक को अध्यापन शैली में दक्ष होने के साथ–साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी की कार्यात्मक दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है।

शिक्षा के क्षेत्र में इण्टरनेट के प्रयोग की असीमित सम्भावनाएं है। मुक्त अधिगम प्रणाली की औपचारिक शिक्षा के सामान्तर एक प्रभावी और अद्यतन प्रणाली बनाने में इण्टरनेट के प्रयोग से अशातीत सफलता मिल सकती है। मल्टीमीडिया सम्बन्धी कार्यक्रमों के सम्प्रेषण में, इण्टरनेट विशेष योगदान कर सकता है। विश्व की

नवीनतम खबरों की प्राप्ति में उपयोगी नोटिसों के आदान–प्रदान में वैश्विक स्तर के शोध सम्बन्धी जानकारी एवं पुस्तकालयों से उपयोगी पुस्तकों की प्राप्ति में भी इण्टरनेट की उपयोगिता अत्यधिक है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है जिसमें सूचना के संचार के लिये हर तरह की तकनीकी समाहित है। यह वह तकनीकी है जो कि सूचना के संचालन की योग्यता रखती है तथा संचार के विभिन्न माध्यमों (रेडियों, टेलीविजन, सेलफोन, कॅप्यूटर, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर) विभिन्न सेवाओं और अनुप्रयोगों से सूचना के प्रसारण की सुविधा प्रदान करता है। शैक्षिक अवसरों को विस्तृत करने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास एवं शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आईसीटी एक प्रभावशाली साधन है।

आईसीटी का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम उपागम को पुस्तकों एवं संसाधनों से विलग कर इन्हें और अधिक प्रभावशाली बनाकर न केवल कक्षा के वातावरण को बल्कि अध्यापक एवं शिक्षण अधिगम उपागम को और अधिक बेहतर बनाना है ताकि तय किए गए उद्देश्यों को सुगम रूप से प्राप्त किया जा सकें। वर्तमान समय में आईसीटी की आवश्यकता का अनुभव प्रत्येक क्षेत्र में किया जा रहा है। सरकार ने भी इसके उपयोग को बढ़ावा दिया है तथा सरकार के द्वारा अथक प्रयास भी किये जा रहे है। हमारे देश में भौतिक अवसंरचना की बहुत ज्यादा विषमतायें है जिस कारण सरकार द्वारा लागू की गयी समस्त योजनाओं का लाभ लाभार्थी तक उचित समय एवं उचित दर पर प्राप्त नहीं हो पाता है इन वंचित लक्ष्य समूहों को इस तकनीकी ज्ञान से जोड़ना आवश्यक है अन्यथा सर्वशिक्षा अभियान जैसे महायज्ञ कभी भी अपने प्रतिफल को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

शोध का औचित्य :–

सभी क्षेत्रों में तीव्रता से बदलाव आता जा रहा है। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए शिक्षकों एवं छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक बने रहने की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धात्मक बनने के लिए विद्यालय एवं समाज की सभी घटनाओं व तथ्यों से अवगत रहना आवश्यक है। अतः सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग वर्तमान समय में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों के लिए उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है। क्योंकि कारोना जैसी महामारी के बाद तकनीकी का उपयोग शिक्षा में बढ़ गया है। लेकिन जब तक शिक्षक और छात्र इसका उपयोग नहीं कर पायेंगे तब तक यह शिक्षा के क्षेत्र में बाधा उत्पन्न करेगा इसलिए प्रत्येक छात्र व शिक्षक को तकनीकी का सही उपयोग करना चाहिए। कक्षा में तकनीकी का प्रयोग करके कक्षा को स्वीकार, उपयोगी व महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के माध्यम से ही किसी समस्या के समाधान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। आज विश्व में जो भी प्रगति हुई है उसका कारण विभिन्न क्षेत्रों में किये गए अध्ययन है तथा उनसे प्राप्त होने वाले परिणाम है।

वर्तमान समय में अगर समय रहते तकनीकी को न सीखा गया तो देश बहुत पीछे रह जाएगा। अतः इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि हर क्षेत्र में तकनीकी का उपयोग हो रहा है, कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नही रहा है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

लिगैंग, सुनिया & लुंगडिम, टी. (2017) ने अरूणाचल प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में आईसीटी के उपयोग के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत सुबनगिरी जिला के 24 माध्यमिक विद्यालयों के 1290 छात्रों को शामिल किया गया। परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रों का आईसीटी के प्रति अनुकूल रूझान है। आईसीटी के प्रति सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। इसके अलावा इस अध्ययन से यह भी पता चला कि लिंग और नस्ल के सम्बन्ध

में आईसीटी के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया। अतः छात्रों को स्कूल में आईसीटी से संबंधित अभिनव कार्यक्रम को बढ़ावा देकर शिक्षा में एकीकरण के संभावित लाभों के बारे में अधिक जागरूक किया जाना चाहिए।

सुलेमान, नाजिम (2019) काजाकिस्तानी उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एकीकरण और उपयोग के प्रति दृष्टिकोण का मूल्यांकन पर अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत काजाकिस्तान के दो विश्वविद्यालयों में काम करने वाले 102 प्रशिक्षक शामिल थे, आकड़ों के विश्लेषण से यह परिणाम प्राप्त होता है कि प्रशिक्षक आमतौर पर शिक्षा में आईसीटी के उपयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है तथा दृष्टिकोण और उन्नत आईसीटी उपकरणों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं पाया गया।

लक्ष्मी, राज & जाबिन, शगुफ्ता (2022) ने लिंग के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण और आईसीटी में योग्यता का अध्ययन बिहार के पटना जिले में स्थित शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में किया। इसमें 300 शिक्षकों का चयन नमूना के रूप में किया गया। परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि आईसीटी के प्रति रवैया अनुकूल है और आईसीटी में योग्यता अधिक है तथा आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण और आईसीटी में योग्यता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। ना ही पुरूष और महिला माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के बीच माध्यमिक सम्बन्ध है। पुरूष तथा महिला माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आईसीटी में योग्यता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

दास, घेवेंथिरन रामदास & शाह, मोहम्मद परिला (2022) ने अंग्रेजी भाषा शिक्षकों के बीच सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आईसीटी का ज्ञान, दृष्टिकोण और उपयोग में अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत मलेशिया में स्थित क्लैंग वैलीसी के आसपास स्थित अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों से डेटा एकत्र किया गया इसमें सार्वजनिक तथा निजी प्राथमिक विद्यालय और माध्यमिक विद्यालय शामिल है तथा कुल 80 उत्तरदाताओं जिसमें 11 पुरूष और 69 महिला शिक्षकों ने भाग लिया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों के बीच ज्ञान दृष्टिकोण और आईसीटी के उपयोग के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

समस्या कथन :–

उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण :–

इस शोध अध्ययन में चयनित की गई समस्या में प्रयोग किए गए शब्दों का संक्षिप्त स्पष्टीकरण।

सूचना एवं संचार तकनीकी– सूचना एवं संचार तकनीकी से तात्पर्य सूचनाओं का संग्रहण एवं उसके सम्प्रेषण के लिए वह नवीनतम तकनीकी जो टैलीकम्यूनिकेशन, कम्प्यूटर ब्राडवैण्ड इण्टरनेट एवं **w.w.w.** आदि का प्रयोग कर भावी तरीके से सूचनाओं के उचित मूल्य पर कम समय में दूरगम्य क्षेत्रों एवं लक्ष्य तक सुगमता से पहुंचता है। इसे हम आईसीटी कहते है जिसका पूरा नाम इन्फॉरमेशन कम्यूनिकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी है।

अभिवृत्ति– किसी वस्तु, व्यक्ति, समूह के प्रति अनुकूल व प्रतिकूल मनोभाव को अभिवृत्ति कहते है। सरल शब्दों में यह कह सकते है कि अभिवृत्ति किसी विशेष संसाधन आदि को प्राप्त करने समझने या ग्रहण करने से सम्बन्धित किसी व्यक्ति की विशेष अभिरूचि या इच्छाशक्ति है।

उच्च शिक्षा– प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्च स्तर की शिक्षा आती है। उच्च स्तर की शिक्षा विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों एवं अनेक विशिष्ट संस्थानों में दी जाती है। विद्यार्थियों को महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत बी.ए. बी.एस.सी. बी.काम. बी.एड. कोर्स कराए जाते है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्रओं में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर में कला संकाय तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :–

1. स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. स्नातक स्तर के कला संकाय तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध विधि :–

शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध में लखनऊ शहर में स्थित जय नारायण पी.जी. कॉलेज के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। न्यादर्श का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग किया गया।

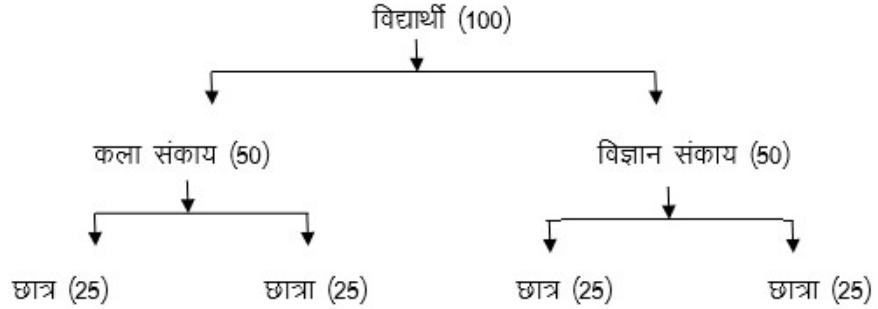

इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। इसके अन्तर्गत 50 विद्यार्थी कला संकाय के है, जिसमें 25 छात्र तथा 25 छात्राएं है तथा 50 विद्यार्थी विज्ञान संकाय से लिये गये है। जिसमें 25 छात्र तथा 25 छात्राएं है।

सीमांकन :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य लखनऊ जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध जय नारायण पी.जी. कॉलेज के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

शोध उपकरण :–

शोध अध्ययन में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग आकड़ों को एकत्रित करने के लिए किया गया है। अभिवृत्ति मापनी विधि में लिकर्ट की अभिवृत्ति मापनी विधि का प्रयोग किया गया। लिकर्ट महोदय ने विभिन्न समूहों के एकाधिपत्य पूंजीवाद, अन्तर्राष्ट्रीयता एवं नीग्रो के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए एक स्केल तैयार किया जिसमें सर्वप्रथम मनोवृत्तियों से सम्बन्धित कथनों को एकत्रित कर लिया जाता

है तत्पश्चात् जिस विषयी समूह की अभिवृत्तियों का अध्ययन करना होता है उसे चुने गए कथनों के प्रति अपनी अभिवृत्तियों को निम्नलिखित श्रेणियों में व्यक्त करता है– 1. दृढ़ स्वीकृत 2. स्वीकृत, 3. अनिश्चित 4. अस्वीकृत, 5. दृढ़ अस्वीकृत

इसमें नकारात्मक प्रश्न पर 0, 1, 2, 3, 4 अंक दिए जाते है तथा सकारात्मक प्रश्नों पर 4,3,2,1,0 अंक दिए जाते है। इस मापनी में कुल 30 प्रश्न शामिल किए गए है। प्रश्नावली को भरने की कोई समय सीमा नहीं है। फिर भी लगभग 1 घण्टे का समय दिया जायेगा।

सांख्यिकीय विधियां :–

प्रस्तुत अनुसंधान में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान 2. मानक विचलन 3. टी–परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रदत्तों को सारणीबद्ध करने के लिए तथा निष्कर्षों को जानने के लिए प्रदत्तों का विश्लेषण करना शोध प्रक्रिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है। अतः सारणीबद्ध प्रदत्तों के आधार पर विश्लेषण तथा व्याख्या को निम्न प्रकार से किया गया जिसका उद्देश्यवार परिकल्पना सहित विवरण तथा व्याख्या की गई है–

उद्देश्य (01) स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–1 (Ho) स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–1

स्नातक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन, टी मान का विवरण निम्न है–

क्रम संख्या	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी परीक्षण मान	स्वतन्त्र कोटि (df)	सार्थक स्तर	सारणी मान	परिणाम
1.	स्नातक स्तर की छात्राएं	50	89.68	3.24	3.59	98	0.05	1.96	अस्वीकृत
2.	स्नातक स्तर के छात्र	50	85.54	2.67			0.01	2.58	अस्वीकृत

सारणी 1 के अवलोकन से पता चलता है कि स्नातक स्तर के छात्रों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 89.68 तथा मानक विचलन 3.24 है। जबकि छात्राओं में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 85.54 तथा प्रमाणिक विचलन 2.67 है जो छात्रों के मध्यमान की तुलना में कम है। जब अन्तर की सार्थकता की जांच हेतु टी परीक्षण का प्रयोग किया गया तो टी.मान 3.59 ज्ञात हुआ जो स्वतंत्रता के अंश (df) 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 तथा 0.01 स्तर पर सारणी मूल्य 2.58 है। जो स्नातक स्तर की छात्राओं से अधिक है। अतः शोध की शून्य परिकल्पना (Ho) स्नातक के छात्रों एवं छात्राओं में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा। निरस्त होती है।

अतः हम कह सकते है कि छात्रों की तुलना में छात्राये आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखती है।

उद्देश्य (02) स्नातक स्तर के कला संकाय तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना –2 (Ho) स्नातक स्तर के कला संकाय तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–2

क्रम संख्या	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी परीक्षण मान	स्वतन्त्र कोटि (df)	सार्थक स्तर	सारणी मान	परिणाम
1.	स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थी	50	91.29	8.66	2.81	98	0.05	1.98	अस्वीकृत
2.	स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	50	86.96	6.58			0.01	2.63	अस्वीकृत

सारणी 2 के अवलोकन से पता चलता है कि स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 91.29 तथा मानक विचलन 8.66 है। जबकि स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 86.96 तथा मानक विचलन 6.58 है जो स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में कम है। जब अन्तर की सार्थकता की जांच हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया तो टी मान 2.81 ज्ञात हुआ जो स्वतंत्र कोटि के अंश (df) 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 है तथा 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.63 है जो स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों से अधिक है। अतः शोध की शून्य परिकल्पना (Ho) स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों तथा स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा। निरस्त होती है।

हम कह सकते है कि विज्ञान संकाय की तुलना में कला संकाय के विद्यार्थी आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखते है।

निष्कर्ष :–

आकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. स्नातक स्तर के छात्रों की तुलना में छात्राएं आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखती है।
2. स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थी, विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखते है।
3. अतः अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर कह सकते है कि लिंग और संकाय के आधार पर विद्यार्थी आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर रखते है।

परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग :–

अध्ययन से प्राप्त परिणामों में से ज्ञात होता है कि आईसीटी के प्रति छात्राएं अधिक अभिवृत्ति रखती है जबकि छात्रों में अभिवृत्ति निम्न पाई गई। अतः छात्रों में आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति उत्पन्न करने के प्रयास करने चाहिए तथा उनमें आईसीटी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। जबकि अध्ययन से स्पष्ट है कि

छात्राएं आईसीटी के प्रति अधिक अभिवृत्ति रखती है। अतः उनकी इस क्षमता का प्रयोग उनके शैक्षिक कार्यों में लाया जाना चाहिए। उन्हें अधिक आईसीटी के संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि वह इसका अनुप्रयोग कर अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सके।

परिणामों से यह भी ज्ञात होता है कि संकाय के आधार पर भी आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया गया। विज्ञान संकाय की तुलना में कला संकाय के विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गई। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में भी आईसीटी के प्रयोग के प्रति जागरूकता को बढ़ाया जाए और उन्हें अधिक आईसीटी संसाधन उपलब्ध करा कर उनमें इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए तथा कला संकाय के विद्यार्थियों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति का उपयोग कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को अधिकतम बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची :–

भट्नागर, ए. बी., एवं मीनाक्षी. (2007). *भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास.* आर लाल बुक डिपो, मेरठ.

भटनागर, ए. बी., एवं मीनाक्षी. (2008). *शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंधन.* आर लाल बुक डिपो, मेरठ.

मालवीय एवं राजीव. (2009). *शिक्षा के नूतन आयाम.* शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद.

गुप्ता, एस. पी. (2011). *अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय कार्य विधि एवं प्रविधि.* शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद.

श्रीवास्तव, एम. एन. (2012). *शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी.* अग्रवाल पब्लिकेशन. आगरा.

योगेन्द्रजीत, बी. (2017). *शिक्षा में नवाचार.* अग्रवाल पब्लिकेशन. आगरा.

Suniya, L., & Lhungdim, T. (2017). Student attitudes towards the use of ict in secondary school in Arunachal Pradesh. *International Journal of Creative Research Thoughts, 5*(4), 1-4.

Suleimen, N., & Nur, S. (2019). Appraising the attitude towards information communication technology Integration and usage in Kazabhstani higher education research. *Journal of Information Technology Education: Research, 18*(1), 11-15.

Laxmi, R., & Jabin, S. (2022). Attitude towards ICT and competency in ICT among secondary school teacher in relation to gender. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 12*, 1-6.

Ramadass, D. D., & Shah, M. P. (2022). Knowledge, attitude and use of information communication technology (ICT) among english language teachers. *Sciestific Research Publishing, 14*(13), 5-15.

How to cite reference of this paper-

रावत, के., एवं बाजपेयी, एन. (2023). उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. *Educational Metamorphosis, 2*(2), 112-118.